देहभान के वश होकर नहीं चलो कुल कलंकित करने वाली चाल।
अब भी अगर देहभान में रहे तो कल्प कल्प रहोगे गुणों से कंगाल।
अब समय नहीं बचा है इतना जो अलबेली हो अपनी हर इक चाल।
ऐ आत्मा बन जाओ एकांतवासी अब छोड़ो माया के सारे जंजाल।
गुण खुद में हर रोज भरते जाओ सर्व विकारों से होकर अनजान।
पकड़कर श्रीमत का हाथ अपना हर कदम बढ़ाओ बाप समान।

ॐ शांति।